# उपसंहार

# उ प सं हा र

नागार्जुन के आँचलिक उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन करते समय उनके उपन्यासों में निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हो गई हैं।

पहले अध्याय में नागार्जुन के जीवन वृतान्त के अंतर्गत अनेक जन्मतिथि और जन्मस्थान के संबंध में विव्दानों में मतभिन्नता दिखाई देती है। इस मत भिन्नता को देखते हुए तथा अन्य प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में उनका जन्म सन १९११ में और जन्म स्थान सतलखा ननिहाल माना है। उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र है, वे संस्कृत और मैथिली भाषा में "यात्री" नाम से और हिंदी में "नागार्जुन" नामसे लिखते रहे हैं। उनका व्यक्तित्व जीवन के अभाव विभावों के साथ विकसित हुआ है जिससे उन्होंने जीवन को जिस रूपमें देखा है परखा है और अनुभव किया है उसे ही उन्होंने लिपिबध्द किया है। वे जीवन संग्राम के अपराजेय योध्दा, उदार और फक्कड मानव, बहुभाषी और प्रगतिवादी तथा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के धनी साहित्यिक हैं। धुम्मकडी करना उनका स्वभाव रहा हैं।

दूसरे अध्याय में उनकी युगीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियोंका समग्र अध्ययन करने से यह पता चलता है कि उनके उपन्यासों की आधारभूमि सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति ही रही है, जो उनकी साम्यवादी दृष्टि की परिचायक है। उनकी धर्म भावना बाह्याडम्बरों और अंधविश्वासों से मुक्त होकर मानवता की परिधि को स्पर्श करती है। साथ ही उन्होंने परंपरागत रूढियों का विरोध स्पष्ट करते हुए सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। आर्थिक विषमता को लक्ष्य करते हुए साम्यवादी वर्ग विहीन समाज की निर्मिती करना उनका ध्येय रहा है। उनके उपन्यासों में जिन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण

प्रस्तुत किया है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी साहित्यिक चेतना युगानुरूप परिवर्तित होती गई है।

तीसरे अध्याय में विवाह विषयक समस्याओं का विविध अंगोपागों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो गया है कि, मिथिला जनपद में "सौरेठ" के मेले में मिथिला के ब्राहमणों के घटक और पंजीकारों की सहायता से विवाह तय किये जाते हैं। वहाँ कुलीनता और निर्धनता के नामपर अनमेल विवाह, बहुविवाह तथा जरठ विवाह हो जाते हैं। जिससे नारी के लिए अकाली वैधव्य प्राप्त हो जाता है, उसे दुःख मय और कष्टपूर्ण जीवन जीना क्रम प्राप्त होता है। इस स्थिति के कारण वहाँ के ये विवाह पध्दतियाँ एक जटिल समस्या बनकर रही है। सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं की कठिनता के कारण विधवा विवाह की समस्या स्थित रही है। इन समस्याओं का यथार्थ चित्राण उनके "रतिनाथ की चाची", "नयी पौध", " वरुण के बेटे", "कुम्भीपाक", "उग्रतारा" और "पारो" आदि उपन्यासों में मिलता है। नागार्जुन ने केवल इन समस्याओं का ही चित्रण प्रस्तुत नहीं किया है बल्कि ऐसी अमानवीय प्रथाओं को तोडने के लिए युवा पीढीसे समाधान भी प्रस्तुत करनेका प्रयास किया है। जो उनके सुधारवादी दृष्टिकोण का परिचायक है।

चौथे अध्याय में नारी जीवन विषयक कुछ अन्य समस्याओं का विशेषत: विधवा समस्या, वेश्या समस्या, विवाह की कुप्रथाएँ, नारीपर किये जानेवाले बलात्कार और अन्य अत्याचार तथा नारी शिक्षा समस्या का समग्र अध्ययन किया है। इन सभी समस्याओं के मूलमें मिथिला अँचल में विवाह तय करनेकी अमानवीय पध्दति और उससे निर्मित नारी विक्रय, रुढिवादिता, धर्मान्धता, कुलीनता के प्रति होनेवाला घमण्ड, आर्थिक दयनीयता, अज्ञान और पुरुष प्रधान संस्कृतिकी दांभिकता दिखाई देती है। जिससे विधवा नारीका अवमानित, प्रताडित और कष्टमय जीवन दिखाई

देता है। ऐसी विधवाएँ नाते रिश्तेदारों के दुर्व्यवहारों से तंग आकर मजबूरीसे वाममार्ग की ओर मुडती है, जिससे कारण वेश्या का नारकीय जीवन उन्हें भोगना पडता है। नारी विधवा हो या सधवा उसे पुरुषी अहंकार से निर्मित सभी अत्याचारों का शिकार होना पडा हैं। तथा वहाँ प्रचलित सनातन धारणाओं के कारण नारी की शिक्षा समस्या भी स्थित रही है। इन समस्याओं का यथार्थ चित्रण उनके "रतिनाथ की चाची" "बलचनमा", "नयी पौध", "कुम्भीपाक", "उग्रतारा" और "पारो" आदि उपन्यासों में मिलता है। नागार्जुन ने केवल नारी विषयक समस्याओं को ही रेखांकित नहीं किया बल्कि इन समस्याओं के मूलमें नारी आर्थिक परावलंबनता, अशिक्षा और पराश्रिता रही है इन बातोंको ध्यान में लेकर नारीका समुचित विकास होने के लिए नारी शिक्षा, आर्थिक स्वाधीनता, तथा नारी स्वातंत्र्य के संबंध में भी सुधारवादी विचारों को स्पष्ट किया है। जिससे यह स्पष्ट हो जाताहै कि नागार्जुन नारी के प्रति युगोंसे चले आ रहे. पुरुषों के अत्याचारों को रोक कर उसे समाज में उचित स्थान दिलाने के प्रबल हिमायती रहे हैं। नारी के प्रति अपनी इसी घनीभूत आत्मीयता की दृष्टि के कारण वे प्रगतिशील उपन्यासकारों में उल्लेखनीय है।

पाँचवे अध्याय में ग्राम जीवन विषयक समस्याओं में आर्थिक समस्या, छुआछूत की समस्या, पारंपारिक अंधविश्वास, रीतिरीवाज और अंधश्रध्दा तथा जमींदारों की शोषण प्रवृत्ति और अत्याचार आदि का अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट दिखाई देता है कि बिहार के मिथिला जनपद में व्याप्त निर्धनता, अज्ञान, धर्माडम्बर, जमींदारी प्रथा, महाजनी और प्राकृतिक प्रकोप के कारण सामान्य किसानोंकी आर्थिक स्थिति किस तरह दयनीय हो जाती है इसके साथ ही वहाँ व्याप्त रही अंधश्रध्दाएँ, रूढीवादिता, भूत प्रेत में विश्वास, मनौती, प्रायश्चित, पूजा-अर्चा आदि परंपरागत

प्रथाओं के नामपर पंडित, पुरोहित तथा ढोंगी साधु जन सामान्यों का किस तरह अविरत शोषण कर रहे है उसका पता चलता है। इसके अतिरिक्त छुआछूत की समस्या का भी प्रचलन रहा है। इन समस्याओं का ज्वलंत चित्रण उनके "रतिनाथ की चाची", "बलचनमा", "नयी पौध" "बाबा बटेसरनाथ", "वरुण के बेटे", "कुम्भीपाक", "उग्रतारा" और "पारो" आदि उपन्यासोंमें मिलता है। नागार्जुनने इन समस्याओं को सुधारवादी तथा साम्यवादी दृष्टिकोण से चित्रित किया है जिससे युवा पीढी के द्वारा किसान सभा, नवजवान संघ आदि के द्वारा जन जागरण शिक्षा प्रचार तथा आर्थिक स्थिति में परिवर्तन करने का प्रयास करते हुए नवीन साम्यवादी समाज रचना के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

इस तरह उपन्यासकार नागार्जुनने अपने उपन्यासों में यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हुए इसमें स्थित पध्दतियों का परिवर्तन करना बहुतही आवश्यकता है। यह जानते हुए उन्होंने उस दृष्टिसे प्रयत्न भी किया है। इस प्रयत्न को सफल बनाने के लिए हम सभी को प्रयत्न करना चाहिए तभी नारी जीवन सुखी हो सकता है, किसानों की दयनीय अवस्था कम हो सकती है।

0-0-0-0-0-0